

हिन्दी साहित्य में मुक्तिबोध का योगदान

डॉ. जे. सेन्दामरै

असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सीतालक्ष्मी रामस्वामी कॉलेज, तिरुच्चि, तमिलनाडु, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12248>

सारांश

गजानन माधव मुक्तिबोध आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, कहानीकार, निबंधकार और आलोचक थे। मुक्तिबोध को नई कविता आंदोलन के प्रमुख कवियों में माना जाता है। उनकी रचनाओं में समाजिक विशमता, भोशण, अन्याय, मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ और व्यक्ति का आंतरिक संघर्ष प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उनकी कविता में बौद्धिकता, समाजिक चेतना और आत्मसंघर्ष का विशेष महत्व है। उनकी भाषा गंभीर, प्रतीकात्मक और विचारप्रधान है।

मूल शब्द: मुक्तिबोध, कवि, नई कविता, सृजनात्मक, समकालीन, प्रगतिशील

मुक्तिबोध का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे सफल कवि, सम्पादक, आलोचक, डायरी-लेखक, पत्रकार, कहानीकार, थे। वे बीसवीं सदी की हिन्दी कविता के सबसे बेचैन, सबसे द्वन्द्वग्रस्त, तड़पता हुआ और ईमानदार कवि हैं। उनकी रचनाओं में सृजनात्मक विस्फोट है। वे ऐसे विशिष्ट कवि हैं जिन्होंने टालस्टाय, दोस्तोवस्की, गोर्की, फ्लोबेयर आदि के उपन्यासों से प्रेरणा ग्रहण की।

मुक्तिबोध आधुनिक हिन्दी साहित्य के अति संवेदनशील, विवेकी एवं क्रान्तिकारी जनकवि हैं। इनका साहित्य क्षेत्र छायावाद के अन्तिम काल से नई कविता की तक अपना विस्तृत आधिपत्य जमाए है। संक्रमण काल के साहित्यकार मुक्तिबोध की विकसित विवेक बुद्धि पारदर्शी दृष्टि तथा अदम्य उत्साह ने उन्हें प्रगतिशील क्रान्तिसृष्टा कवि बनने की सामर्थ्य दी है। कवि मुक्तिबोध में नए मूल्यों को पहचानने और उनसे जुड़ने की प्रबल जिज्ञासा और बेचैनी मिलती है। भारतीय समाज के इस संक्रमण काल में सामन्तीय व्यवस्था का स्थान पूँजीवादी व्यवस्था ले रही थी। इसी के साथ अवसरवादिता और स्वार्थ बढ़ रहा था। इन सब परिस्थितियों का जितना गहन अध्ययन मुक्तिबोध ने किया है सम्भवतः उनके समकालीन किसी कवि ने नहीं।

अपने समकालीनों में मुक्तिबोध ही एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी चेतना पर तत्कालीन परिवेश का दबाव अधिकाधिक पड़ा था। मार्क्सवादी दर्शन ने उन्हें अपने समय और ऐतिहासिक दायित्व को समझने की दृष्टि प्रदान की।

भारतीय संस्कृति, परंपरा एवं मानवीयता का विचार बोध उनके पास निजी निधि रूप में है। इतना अवश्य माना जा सकता है कि मार्क्सवाद उन्हें अपने चिन्तन के अनुकूल लगा इसलिए अपनी अभिरुचियों तथा संस्कारों के अनुकूल उन्होंने उसका प्रयोग किया।

मुक्तिबोध आधुनिक युग के सबसे अधिक ईमानदार, आस्थावान, संघर्षशील, प्रगतिकामी, कवि हैं। मुक्तिबोध के साहित्यिक काल में गाँधी दर्शन, अस्तित्ववाद को स्वीकार किया गया है। उन्हें जन-जागृति लाने वाला मसीहा और जनता का प्रबल समर्थक माना है। किन्तु कहीं भी उनके सिद्धांतों पर अमल नहीं किया है क्योंकि कवि की दृष्टि में वे कुछ सिद्धांत अबोधिकता से पूर्ण और भावुक कर्म-पद्धति वाले हैं। अस्तित्ववादी पाश्चात्य दर्शन भी मुक्तिबोध को भारतीय संवेदनात्मक सम्बन्धों के प्रतिकूल प्रतीत हुआ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप और फ्रांस में व्यक्ति को महत्व देने वाला अस्तित्ववादी आन्दोलन, हिन्दी साहित्य में भी प्रवाहमय

रहा। इसके प्रभाव से रचित साहित्य में व्यक्ति का अंकन व्यक्ति के एकांकी अस्तित्व के रूप में किया गया। कवि मुक्तिबोध ने इसका विरोध किया क्योंकि सामाजिक पारिवारिक सम्बन्धों से कटा हुआ व्यक्ति न केवल अहंवादी और स्वार्थी ही हो जाता है उसके व्यक्तित्व का विकास कुण्ठित हो जाता है और रिश्तों की मधुरतामयी संवेदना से शून्य उसका जीवन बोझ बन जाता है। भारतीय परम्परा और संस्कृति इन सम्बन्धों की संवेदना के बल पर ही भातिप्रिय एवं विश्व विजयिनी बनी हुई है। ऐसा नहीं है कि मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्ति को महत्व नहीं दिया गया। "इनमें सामाजिक ऊहापोह में जिन्दगी व्यतीत करने वाला व्यक्ति नहीं है। परवर्ती साहित्य में मूर्तित व्यक्ति की अन्तर्मुखता और निसंगता परिवेशगत है। मुक्तिबोध के साहित्य में वर्णित मनुष्य का ऐसे मनुष्य का आत्मसंघर्ष और आत्मभर्त्सना है जो उत्तरोत्तर निजबद्धता को त्यागता हुआ सामाजिक बनता जाता है।" मुक्तिबोध के काव्य रचना के केन्द्र में हैं-मनुष्य, जो अपनी समस्त कमजोरियों, सीमाओं और परिस्थितियों से घिरा हुआ है। अपनी कमजोरियों के प्रति ईमानदार है, फिर भी आस्थावान् संघर्षशील है। कवि में महज प्रचारात्मकता, राजनीतिक प्रतिबद्धता नहीं है वरन् मानवीय साक्षात्कार की संलग्नता है। कवि का युगबोध जिस विस्तृत फलक को लेकर चला है उसे वादों में नहीं वरन् आने वाले युग का नक्शा भी समेटे हुए है।

कवि के काव्य-संसार में छायावाद से नई कविता तक की यात्रा में ऐसे पड़ाव नहीं खोजे जा सकते जिससे उनकी कविताओं को अलग-अलग वादों में बाँट दिया जाए। छायावादी भौली के साथ सामाजिकता का पुट उन्हें प्रयोगवादी बनाता है, वहीं सामाजिकता का प्रगतिवादी पुट प्रयोगों के नए नए रूपों के साथ उन्हें प्रयोगवादी सिद्ध करता प्रतीत होता है। और जब प्रयोगवाद के संस्थापक अज्ञेय द्वारा सम्पादित प्रथम तारसप्तक में मुक्तिबोध का योगदान देखते हैं तब कवि प्रयोगवादी से अधिक नई कविता की विस्तृत भूमि की ओर बढ़ते हुए मिलते हैं।

हिन्दी साहित्य में उनका स्थान निजी विशिष्टताओं के कारण सर्वोपरि है। उन जैसे युगदृष्टा एवं युगसृष्टा कवि ने किसी वाद का न किसी दर्शन का अन्धानुकरण किया है वरन् अपने मौलिक चित्रण और सूझ-बूझ के बल पर ही हिन्दी साहित्य के लिए नई दिशाएँ, नए अवसर एवं नवभंगिमा प्रस्तुत कर दी है।

मुक्तिबोध ने परिवर्तन के क्रम को समझने के लिए इतिहास, संस्कृति, परम्परा युगीन परिस्थितियों आदि का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने नवीन समस्याओं को भी चिन्तन प्रक्रिया का आधार बनाया है। फ्रैण्टेसी के माध्यम से, अपनी प्रशस्त कल्पना

द्वारा वर्तमान युग की समस्त हलचलों का यथार्थ अंकन ही नहीं किया वरन् भविष्य की झलक भी स्पष्टता पूर्वक दिखा दी है। मुक्तिबोध की विशिष्टता केवल समस्यांकन में नहीं वरन् समाधान देने में है। कवि ने मानव-जीवन का कोई भी पहलू छोड़ा नहीं है। सभी क्षेत्रों में वह निर्भीक भाव से दृढ़ता के साथ गहरे पैठ सका है।

मनुष्य की जिजीविशा और जीवन के प्रति आस्था भी प्रगतिशील साहित्य का महत्वपूर्ण रूप माना गया है। इस दृष्टि से भी मुक्तिबोध सर्वाधिक आस्थावान् कवि सिद्ध होते हैं। मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्तिवादिता है लेकिन वह समाजोन्मुखी है। कवि ने अपने आप को पूर्णतः समाज के लिए अर्पित कर दिया है। न तो वह अकेले में मुक्ति की आकांक्षा रखता है और न ही अकेले आत्म साक्षात्कर कर सकता है। छायावादी रुझान काल में भी वह समाजोन्मुख रहा है। परवर्ती काल में पूर्णतः समाज में विलय हुआ है। मुक्तिबोध जानते हैं कोरी भावना से समाज में समता स्थापित नहीं की जा सकती इसके लिए क्रान्ति ही उसे एकमात्र उपाय दिखाई देता है।

मुक्तिबोध की लम्बी लम्बी कविताओं में युग की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक असंगतियाँ, अमानवीयताएँ एवं निरर्थकताएँ व्यक्त हैं। उनसे जूझता देश और समाज, मनुष्य और व्यक्ति कभी अपनी कमजोरियों से क्षुब्ध होता है और कभी विसंगतियों में राह न खोज पाने के कारण तनाव युक्त बना रहता है। धीरे-धीरे अपने अन्तर के स्याह अँधेरे में उतर प्रकाश की किरण पर आस्था से भर उठता है और संघर्षशील बन जीवन-संग्राम में डट जाता है मुक्तिबोध ने क्रांति के लिए जिस संगठन और एकजुटता का आयोजन किया है मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसकी सफलता और सार्थकता सिद्ध होने की पूरी सम्भावना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कबीर, निराला, मुक्तिबोध – डा ललिता अरोड़ा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. हिन्दुस्तानी त्रैमासिक – जुलाई – सितम्बर – 2017